महिला सशक्तिकरण का आधार एवं भारत में इसका प्रभाव

*डॉ. सुशीला सारस्वत

सारांश–

यह पत्र भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता का विश्लेषण करने का प्रयास करता है और महिला सशक्तिकरण के तरीकों और योजनाओं पर प्रकाश डालता है। सशक्तिकरण सामाजिक विकास की मुख्य प्रक्रिया है, जो महिलाओं को ग्रामीण समुदायों के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सतत विकास में भाग लेने में सक्षम बनाती है। आज महिलाओं का सशक्तिकरण 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण चिंताओं में से एक बन गया है, लेकिन व्यावहारिक रूप से महिला सशक्तिकरण अभी भी वास्तविकता का एक भ्रम है। महिलाओं का सशक्तिकरण अनिवार्य रूप से समाज में पारंपरिक रूप से वंचित महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति के उत्थान की प्रक्रिया है। हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि कैसे महिलाएं विभिन्न सामाजिक बुराइयों का शिकार बनती हैं। महिला सशक्तिकरण संसाधनों के लिए महिलाओं की क्षमता का विस्तार करने और रणनीतिक जीवन विकल्प बनाने का महत्वपूर्ण साधन है। यह उन्हें सभी प्रकार की हिंसा से बचाने की प्रक्रिया है। यह अध्ययन विशुद्ध रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। भारत की महिलाएं अपेक्षाकृत अशक्त हैं और सरकार द्वारा किए गए कई प्रयासों के बावजूद वे पुरुषों की तुलना में कुछ कम स्थिति का आनंद लेती हैं। यह पाया गया है कि महिलाओं द्वारा असमान लैंगिक मानदंडों की स्वीकृति अभी भी समाज में प्रचलित है। अध्ययन का निष्कर्ष इस अवलोकन से निकला है कि बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना और विभिन्न योजनाओं को लागू करना महिला सशक्तिकरण के लिए सक्षम कारक हैं।

मुख्य शब्दः महिला अधिकारिता, बुनियादी अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, योजना कार्यान्वयन।

परिचय

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं के व्यक्तियों और समुदायों की आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, लिंग या आर्थिक शक्ति को बढ़ाना है। महिलाएं हर अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग हैं। किसी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास और सामंजस्यपूर्ण विकास तभी संभव होगा जब महिलाओं को पुरुषों के साथ प्रगति में समान भागीदार माना जाएगा। भारत में महिला सशक्तिकरण कई अलग–अलग चरों पर बहुत अधिक निर्भर है जिसमें भौगोलिक स्थिति (शहरी/ग्रामीण), शैक्षिक स्थिति, सामाजिक स्थिति (जाति और वर्ग) और उम्र शामिल है। स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक अवसर, लिंग आधारित हिंसा और राजनीतिक भागीदारी सहित कई क्षेत्रों में राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय (पंचायत) स्तरों पर महिला सशक्तिकरण पर नीतियां मौजूद हैं। महिला सशक्तीकरण स्वायत्तता और उनके जीवन पर नियंत्रण को सक्षम बनाता है। सशक्त महिलाएं अपने खुद के विकास की एजेंट बन जाती हैं, अपने स्वयं के एजेंडे को निर्धारित करने के लिए विकल्पों का प्रयोग करने में सक्षम हो जाती हैं और समाज में अपनी अधीनस्थ स्थिति को चुनौती

विश्व में नारी आंदोलन की नींव 19वीं शताब्दी में रखी गयी थी और कई राष्ट्र इस आंदोलन के भागीदार बने थे। जब नारी आंदोलन प्रारंभ हुये तभी स्त्री सशक्तिकरण की अवधारणा प्रमुख रूप से दुनिया के सामने आयी।

इस लिए स्त्री सशक्तिकरण को समझने के लिए नारी आंदोलन को समझना अत्यंत आवश्यक है। आसान शब्दों में कहे तो नारी आंदोलन की शुरुआत नारी को निम्न समझने से हुयी । नारीवाद का प्रमुखा सिद्धांत इस पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को हीन दर्जा प्राप्त करने से हुयी। क्यों कि समाज द्वारा उसके लिए जीवन जीने के नियम और स्वरूप को गाठीत किया गया। इस लिए समाज ने उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व को नकार दिया। नारी आंदोलन किसी पुरुष का नहीं बल्कि पितृसत्तात्मक विचारधारा का विरोध करता है। यह आंदोलज स्त्री को पुरुष के बराबर समान आधिकार व अवसर की मांग करता है। यह आंदोलन लैंगिग असमानता के स्थान पर इस अवधारणा को मानता है कि स्त्री भी मनुष्य है और मनुष्य होने के साथ–साथ वह दुनिया की आधी आबादी है। एवं सृष्टि निर्माण में वह बराबर की भागीदार है।

नारी आंदोलन का पहला चरण 19वीं शताब्दी की उत्तरार्ध एवं 20वीं शताब्दी का प्रारंभ रहा है। शहरी एवं उदारवादी और औद्योगिक माहौल में महिलाओ के लिए समान अवसर उपलब्ध करवाना इसका प्रमुख उद्देश्य था।

इसकी दूसरी लहर में यह निर्धारित किया जाए कि कानुन व वास्तविक असमानताएं दोनो आपस में जटिलता पूर्वक जुड़ी हुयी है और इसे दूर किया जाना चाहिए। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप नारीत्व की परिभाषा को चुनौती की गयी। वैश्विक रूप में जिस प्रकार नारीवाद को देखा जा रहा था उसे गढ़ा जा रहा था, उसी क्रम में भारत में भी महिलाओं की स्थितियों को लेकर लगातार सुधार के व्यापक प्रयास किये जा रहे थे। लेकिन इसका स्वरूप पाश्चात्य देशों जैसा नहीं था। भारत में नव जागरण के उत्तरार्ध से इसकी शुरुआत मानी जाती है। 1915 के आस–पास से यह उत्थान समाज सुधार व राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़कर आगे बढ़ रहा था। इसमें अंध विश्वासों के विरुद्ध आवाज, बाल– विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई गयी। राजा राम मोहन राय, विवेकानंद, विद्या सागर ज्योतिबा, सावित्री बाई फूले आदि लोगों ने तत्कालीन समाज के अनुसार कित्रियों की समस्याओं को दूर कर उनके अनुकूल माहौल बना और इनको सशक्त करने की दशा में महत्वपूर्ण कार्य किये।

भारत में स्त्री को सशक्त करने की दिशा में नारी आंदोलनों का दूसरा दौर 1915 में गांधी आगमन के साथ आरंभ हुआ। 1917 में भारतीय महिला संघ की स्थापना हुभी। इस समय गांधी एवं अम्बेडकर द्वारा महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने का सराहनीय प्रयास किया गया। महिलाओं को मताधिकार दिलवाना, लैंगिग भेद को समाप्त करना व समानता का अधिकार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

भारत में इसका तीसरा चरण अभी तक देखा जा सकता है। उसके प्रमुख बिन्दुओं में महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जीवन में समानता आदि प्रमुख है।

पूरे विश्व में 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। प्रमुख व्यंग्य कार हरिशंकर परसाई जी के नाम की पंक्ति है कि दिवस कम जोरो के मनाये जाते है. मजबूत लोगों के नहीं। सशक्त होने का आराम केवल घर से बाहर निकल कर नौकरी करना या पुरूषों के कंधा से कंधा मिला कर चलना भर नहीं है। सशक्त होने का आशय यहाँ पर उसके निर्णय ले सकने की क्षमता का आधार है। वह किसी पर निर्भर नहीं है। आज आर्थिक रूप से सशक्त होना उसके लिए बहुत जरूरी है। अगर यह आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है तो वह कभी सशक्त नहीं हो सकती ।

भारत मे आज महिलाओ को सभी क्षेत्रों में वैधानिक रूप से समान आधिकार प्राप्त है। लेकिन समाज में उन्हें आज भी संघर्ष करना पड़ता है। सामाजिक रूप से हमारे समाज का मूल आज भी पितृसतात्मकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह ढ़ॉचा आज भी मजबूत है। खॉप, पंचायते एवं इसके समान संस्थायें आज भी महिलाओ के वस्त्र पहनने को लेकर मोरल पुलिसिंग के तमाम प्रावधान सुझाते रहते है। धर्म भी इसमें प्रमुख भूमिका निभाते रहे हैं। धार्मिक

स्थलों पर महिलाओं के प्रवेश को वर्जित करना इसके ताजातरीन परिणाम है। सबरीमाला या अन्य धर्म के स्थलों पर प्रवेश न करना मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। धर्म जाति के गठजोड, रूढ़ि व अंध विश्वास ने महिलाओं को और शोषित किया है।

राजनीति के क्षेत्र में इतिहास से लेकर वर्तमान तक पुरूषों के एकाधिकार का क्षेत्र रहत है। कही पर भी इस पर महिलाओं का एकाधिकार स्थापित नहीं हुआ है। राजनीति घरेलु चार दिवारी से बाहर निकल कर समाज को संचालित करने वाली, दिशा देने का कार्य करती है। विश्व के हर कोने में पूरे समाज में राजनीतिक पदों पर पुरुषों को ही देखा गया है। भारतीय समाज भी इससे अछूता नहीं है।

***सह–आचार्य**
हिन्दी विभाग
बी.बी.डी राजकीय महाविद्यालय
चिमनपुरा, शाहपुरा (राज.)

संदर्भ

1 अन्नपूर्णा नौटियाल,हिमांशु बौराई। (2009)। 'गढ़वाल हिमालय में महिला सशक्तिकरण बाधाएँ और संभावनाएँ', कल्पाज़ प्रकाशन, दिल्ली।

2 ब्रैडी, मार्था (2005). विकासशील विश्व में युवा महिलाओं के लिए सुरक्षित स्थान बनाना और सामाजिक संपत्ति का निर्माण करनारू खेल के लिए एक नई भूमिका। महिला अध्ययन त्रैमासिक 2005, खंड 33, संख्या 1 और 2

3. क्रिस्टाबेल, पी.जे., (2009)। 'क्षमता निर्माण के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की भूमिका। 'माइक्रोफाइनेंस', कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।

4 दंडीकर, हेमलता. (1986)। भारतीय महिला विकासरू चार लेंस। दक्षिण एशिया बुलेटिन, (1), 2–10। दिल्ली।

5 डॉ. दासरती भुइयां (2006)। 'भारतीय महिलाओं का सशक्तिकरणः 21वीं सदी की एक चुनौती' उड़ीसा समीक्षा।

6 हैंडी, एफ., और कसम, एम. (2004)। ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण. आईएसटीआर सम्मेलन, टोरंटो कनाडा में प्रस्तुत किया गया पेपर।

7 हैरियट बी. प्रेसर, गीता सेन, (2003)। श्महिला सशक्तिकरण और जनसांख्यिकीय प्रक्रियाएंश, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क।

8 कबीर, एन. (1995). महिलाओं को निशाना बनाना या संस्थाओं को बदलना? एनजीओ के गरीबी उन्मूलन प्रयासों से नीतिगत सबक। व्यवहार में विकास 5(2), 108–116.

9. कबीर, एन. (2005). लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरणरू एक महत्वपूर्ण विश्लेषण तीसरा सहस्राब्दी विकास लक्ष्य। लिंग और विकास 13(1), 13–24.

10 कबीर, नैला. (2003)। उलटी वास्तविकताएँः विकास विचार में लिंग पदानुक्रम। लंदन, वर्सो, पीपी–69–79, 130–136।

11 काचिका, टी. (2009)। दक्षिणी अफ़्रीका में महिलाओं के भूमि अधिकार' मलावी, मोज़ाम्बिक, दक्षिण अफ़्रीका, जाम्बिया और ज़िम्बाब्वे से समेकित आधारभूत निष्कर्ष। लंदनरू निज़ा और एक्शना एआईडी इंटरनेशनल।

12 किशोर, एस. और गुप्ता, के. (2009)। भारत में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस–3) भारत, 2005–06, अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, देवनार, मुंबई।

13 लेनी, जे. (2002)। संचार प्रौद्योगिकी परियोजना में ग्रामीण महिला सशक्तिकरण कुछ विरोधाभासी प्रभाव. ग्रामीण समाज, 12(3), 224–245,

14 मोसेडेल, सारा (2005)। नीति क्षेत्र. महिला सशक्तिकरण का आकलन की ओर वैचारिक ढांचा। अंतर्राष्ट्रीय विकास जर्नल. जे. इंट. देव. 17 243–257

15 पीटर्स, एम., और मार्शल, जे. (1991)। शिक्षा और सशक्तिकरणः उत्तर आधुनिकतावाद और मानवतावाद की आलोचना। शिक्षा और समाज, 9(2).